उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

विभाग– शिक्षाशास्त्र

एम0ए0 (शिक्षाशास्त्र) का संशोधित पाठ्यक्रम

CBSE

आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्र सेमेस्टर प्रणाली का पाठ्यक्रम

कार्यवृत्त

राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के अनुक्रम में दिनांक 07 फरवरी, 2023 को आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम (CBCS) के पुनर्रचना एव संशोधन हेतु पाठ्यक्रम निर्माण समिति (बी0ओ0एस0) बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विषय–विशेषज्ञों द्वारा सम्यक् विचार–विमर्श कर सहमति से निम्नलिखित निर्णय लिये गये–

1. डॉ. अमित कुमार जायसवाल
2. डॉ. पवन जी.
3. डॉ. अरविन्दनारायण मिश्र
4. डॉ. प्रकाश चन्द्र पन्त
5. डॉ. विन्दुमती द्विवेदी
6. श्रीमती मीनाक्षी सिंह रावत
7. डॉ. सुमन प्रसाद भट्ट

- शिक्षाशास्त्र विषय में आचार्य (एम0ए0) की उपाधि प्रदान करने वाले इस पाठयक्रम में कुल चार सेमेस्टर होगें। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर होगें। दोनो सेमेस्टर मे पांच–पांच प्रश्नपत्र होंगे। द्वितीय वर्ष जो कि अन्तिम वर्ष होगा, उसमें भी दो सेमेस्टर होंगे ।
- सभी सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र 100 अंक के होंगे। (80 अंक बाहय मूल्यांकन और 20 अंक आन्तरिक मूल्यांकान) के होंगे।
- आन्तरिक मूल्यांकन प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों के कक्षागत परीक्षण, 5 अंक के प्रदत्त कार्य और 5 अंको के एक सेमिनार पर आधारित होगा।
- प्रत्येक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र में छात्र को तीन घटे की अवधि में प्रश्नों के उत्तर देने होगें। जिसमें परीक्षा का माध्यम–संस्कृत/अंग्रेजी/हिन्दी होगा। आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्र में प्रवेश का आधार बी0एड0 एवं बी0ए0 (शिक्षाशास्त्र) के अंको का प्रतिशत् होगा।
- मूल पाठ्यक्रम (Core Course) के 16 प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र 6 क्रेडिट का होगा।
- प्रत्येक सत्रार्द्ध 30–30 क्रेडिट के होगें । सम्पूर्ण पाठ्यक्रम 120 क्रेडिट का होगा।
- वैकल्पिक विषय मे (Elecvtive Course) को EC-A तथा EC-B को रखा गया है। जिसमें छात्रों को रुचि के अनुसार किसी एक विषय का चयन करना है। जिसका अध्ययन वह चतुर्थ सेमेस्टर तक करता रहेगा। वैकल्पिक विषय के प्रश्न पत्र की भाषा हिन्दी रहेगी।
- अन्तिम सेमेस्टर में लघुशोध प्रबन्ध सभी के लिए अनिवार्य होगा।
- लघुशोध भी 100 अंको का होगा (75 लघुशोध प्रबन्ध तथा 25 अंक साक्षात्कार हेतु निर्धारित है, बाहय एवं आन्तरिक परीक्षक सम्मिलित रूप से लघुशोध प्रबन्ध का मूल्यांकन करेंगे। लघु शोध प्रबन्ध की भाषा संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी होगी।
- आचार्य (एम.ए) शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित/निर्धारित संगणक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यह परीक्षा प्रथम एवं चतुर्थ सत्रार्द्ध में होगी।
- आचार्य का सम्पूर्ण पाठयक्रम 22 प्रश्नपत्रों व 120 क्रेडिट का होगा। 22 प्रश्नपत्रों में से 02 प्रश्नपत्र संगणकविज्ञानम (OC-1 एवं OC-2) बिना क्रेडिट (NON CREDIT) के होंगे प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 पूर्णांक का होगा। इस आधार पर कुल 20 प्रश्नपत्रों के पूर्णांकों का योग 2000 होगा।
- संगणक विज्ञान (OC-1 एवं OC-2) बिना क्रेडिट (NON CREDIT) प्रश्नपत्रों में आन्तरिक मूल्यांकन नहीं होगा। इन प्रश्न पत्रों में भी उत्तीर्ण हाना अनिवार्य होगा। इन दोनों प्रश्नपत्रों का माध्यम हिंदी अथवा अंग्रेजी होगा।

प्रथम सत्रार्द्ध

पाठयक्रम–

CC-01 शिक्षायाः दार्शनिकाधारः (प्रथम भाग) 80 बाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

CC-02 शिक्षायाः समाजशास्त्रीयाधाराः (प्रथम भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-03 शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधारः (प्रथम भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-04 भारतीयशिक्षायाः समसामयिकसन्दर्भ (प्रथम भाग) 80 बाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

EC-A1 शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध (प्रथम भाग) 80 बाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

EC-B1 शैक्षिक तकनीकी (प्रथम भाग) 80 बाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

कम्प्यूटर परीक्षा –OC-1 (संगणक परीक्षा पूर्णांक के अतिरिक्त होगा)

द्वितीय सत्रार्द्ध

पाठयक्रम–

CC-05 शिक्षायाः दार्शनिकाधाराः (द्वितीय भाग) 80 बाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

CC-06 शिक्षायाः समाजशारत्रीयाधाराः (द्वितीय भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-07 शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधाराः (द्वितीय भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-08 भारतीयशिक्षायां समसामयिकसन्दर्भेः (द्वितीय भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

EC-A1 शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध (द्वितीय भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

EC-B1 शैक्षिक तकनीकी (द्वितीय भाग) 80 बाह्य मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

तृतीय सत्रार्द्ध

CC-09 शिक्षायाम् अनुसन्धान प्रविधिः (प्रथम भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-10 शिक्षायां प्रदत्तविश्लेषणस्य विधयः (प्रथम भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-11 तुलनात्मक–शिक्षा एवं पाठ्यचर्याविकास : (प्रथम भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-12 शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

EC-A3 अध्यापक शिक्षा– (प्रथम भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

EC-B3 विशिष्ट शिक्षा (प्रथम भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

नोट– छात्रों को तृतीय सेमेस्टर में ही लघुशोध के शीर्षक का चयन करना है, और चतुर्थ सेमेस्टर के दौरान मुख्य परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व लघु शोध प्रबन्ध जमा करना होगा।

चतुर्थ सत्रार्द्ध

CC-13 शिक्षायाम् अनुसन्धानप्रविधिः (द्वितीय भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-14 शिक्षायां प्रदत्तविश्लेषणस्य विधयः (द्वितीय भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-15 तुलनात्मक–शिक्षा एवं पाठ्यचर्याविकासः (द्वितीय भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिकमूल्यांकन।

CC-16 लघु शोध प्रबन्ध (75 अंक वाहय मूल्यांकन तथा 25 अंक साक्षात्कार)

EC-A4 अध्यापक शिक्षा– (द्वितीय भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

EC-B4 विशिष्ट शिक्षा – (द्वितीय भाग) 80 वाहय मूल्यांकन 20 आन्तरिक मूल्यांकन।

कम्प्यूटर परीक्षा –**OC-2** (संगणक परीक्षा पूर्णांक के अतिरिक्त होगा)

नोट– प्रथम एवं चतुर्थ सत्रार्द्ध में कम्प्यूटर परीक्षा अनिवार्य है।

चतुर्थ सेमेस्टर के अन्त में लघुशोध प्रबन्ध जमा किया जायेगा। 75 अंक लघुशोध प्रबन्ध के मूल्यांकन तथा 25 अंक साक्षात्कार हेतु निर्धारित हैं। सभी विद्यार्थियों के लिए लघुशोध अनिवार्य होगा। विभागीय शोध समिति द्वारा निर्धारित पर्यवेक्षक के निर्देशन में छात्र लघुशोधसम्बन्धी कार्य करेंगे। छात्रों को लघुशोध प्रबन्ध की तीन प्रतियां विभाग में चतुर्थ सत्रार्द्ध की परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व जमा करनी होगी। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित एवं वाहय परीक्षक द्वारा सहमति के आधार पर साक्षात्कार की तिथि निश्चित की जायेगी। निर्धारित तिथि पर साक्षात्कार में उपस्थित न होने की दशा में उक्त छात्र आगामी सत्रार्द्ध के छात्रों के साथ साक्षात्कार दे सकेगा।

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

प्रथम–सत्रार्द्धः

शिक्षायाः दार्शनिकाधारः

प्रश्नपत्र –CC-01

पूर्णांक– 100

(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः –

1. शिक्षा– दर्शनयोः सम्प्रत्ययस्य व्याख्याकरणे समर्थाः भवेयुः।
2. शिक्षा– दर्शनयोः सम्बन्ध–स्पष्टकरणे समर्थाः भवेयुः।
3. शिक्षायां दर्शनस्य योगदानमवबोधने समर्थाः भवेयुः।
4. शिक्षायाः क्षेत्रे विभिन्न भारतीय–दार्शनिकानां पाश्चात्य दार्शनिकानां च योगदानस्य व्याख्याकरणे समर्थाः भवेयुः।
5. स्वतंत्रता–समानतयोः सम्प्रत्ययम् अवबुध्य अस्य शिक्षायाः क्षेत्रे महत्त्वस्य व्याख्याकरणे समर्थाः भवेयुः।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– **शिक्षादर्शनम्**

(क) सम्प्रत्ययः, परिभाषा च।

(ख) प्रकृतिः।

(ग) सम्बन्धः।

भारतीय–दर्शनानि, सांख्य–वेदान्त–न्याय–बौद्ध–जैन–इस्लाम–दर्शनानां सम्प्रत्ययः, तत्त्वानि, मूल्यमीमांसा च तथा चैतेषां निहितार्थः।

अन्वितिः 2 – **दर्शनस्य आधुनिकसम्प्रत्ययः**

तार्किकविश्लेषणम्, तार्किकानुभववादः, सापेक्षवादश्च।

अन्वितिः 3– **प्रमुखपाश्चात्यदर्शनानि**

प्रकृतिवादः, आदर्शवादः, प्रयोजनवादश्च। एतेषां ज्ञानमीमांसा तत्त्वमीमांसा मूल्यमीमांसा सन्दर्भे, एतेषां शिक्षानुसारम् उद्देश्यानि, विषयवस्तु, शिक्षणविधिः, शैक्षिकनिहितार्थश्च।

अन्वितिः 4– **शिक्षायाः सामाजिक–दर्शनम्**

स्वतन्त्रता समानता च।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0 – शिक्षा दर्शन
2. सक्सेना आर0एस0 – शिक्षा सिद्धान्त
3. रस्क0 आर0 एस0 – शिक्ष के दार्शनिक सिद्धान्त
4. पाण्डेय आर0 एस0 – शिक्षा दर्शन

आचार्य(एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)
प्रथम सत्रार्द्धः
शिक्षायाः समाजशास्त्रीयाधाराः
प्रश्नपत्रम्–CC-02

पूर्णांक– 100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानिछात्राः–

1. शैक्षिकसमाजशास्त्रस्यार्थं सम्प्रत्ययं च ज्ञास्यन्ति।
2. सामाजिक संस्थानानां प्रत्ययं ज्ञास्यन्ति।
3. सामाजिकान्तक्रियां तस्याः शैक्षिकं निहितार्थं ज्ञास्यन्ति।
4. सागाजिकपरिवर्तनस्य सम्प्रत्ययं ज्ञास्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– **शैक्षिकसमाजशास्त्रम्**

(क) शैक्षिकसमाजशास्त्रं समाजशास्त्रीयशिक्षायाः अवधारणा प्रकृतिश्च।

(ख) सामाजिकसंस्थाः ताः प्रभावकारकाणि, लोकपरम्पराः, समुदायः विभिन्न–संस्थाः मूल्यानि च।

(ग) सामाजिक संस्थानां गत्यात्मक–वैशिष्टयानि, शैक्षिक–निहितार्थश्च।

अन्वितिः 2 – **सामाजिकान्तः क्रिया**

(क) सामाजिकसमूहः अन्यैः समूहैः सह सम्बन्धः, समूहगतिशीलता च।

(ख) सामाजिकस्तरीकरणम्, सम्प्रत्ययः, शैक्षिक–निहितार्थश्च।

अन्वितिः 3– **संस्कृतिः**

(1) **संस्कृतेः अर्थः , प्रकृतिश्च।**

(क) संस्कृतेः परिप्रेक्ष्ये शिक्षायाः भूमिका।

(ख) शिक्षायाः सांस्कृतिक–निर्धारक–तत्वानि।

(ग) शिक्षा सांस्कृतिकपरिवर्तनं च।

अन्वितिः 4– **सामाजिकं परिवर्तनम्**

(क) अर्थः सम्प्रत्ययश्च।

(ख) भारतीय सन्दर्भे नगरीकरणम्, पश्चिमीकरणम्, राजनीतिकरणम्, आधुनिकीकरणम्, सांस्कृतिकीकरणम्, सम्प्रत्ययः शैक्षिक–निहितार्थश्च।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. जायसवाल सीताराम – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
2. मिश्र डॉ0 भास्कर – शिक्षा संस्कृति, एक सन्दर्भ
3. पाठक डॉ0 आर0 पी0 – शिक्षाशास्त्र एक परिचय
4. सक्सेना एन0आर0 स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)
प्रथम सत्रार्द्ध
शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधारः (प्रथम भागः)
प्रश्नपत्र – CC-03

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः –

1. छात्राः शिक्षायां मनोविज्ञानं प्रयोगात्मकविज्ञानरूपेण अवबोधने समर्थाः भवेयुः।
2. छात्राः शिक्षामनोविज्ञानस्य क्षेत्राणि ज्ञातुं शक्नुवन्ति।
3. वृद्धेः विकासस्य च प्रक्रियायाः विश्लेषणं कर्तुं शक्नुवन्ति।
4. वैयक्तिकभिन्नतायाः अर्थः सम्प्रत्ययं ज्ञातुं शक्नुवन्ति।
5. विशिष्ट एवं मन्दबुद्धिबालकानां सम्प्रत्ययं ज्ञातुं शक्नुवन्ति।
6. सृजनात्मकतायाः सम्प्रत्ययं वैशिष्ट्यानि च ज्ञाने समर्थाः भवेयुः।
   शिक्षायां अस्याः महत्त्वं व्याख्यायितुं शक्नुवन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

(1) शिक्षा एवं मनोविज्ञानस्यार्थः

(क) शिक्षा एवं मनोविज्ञानमध्ये सम्बन्धः

(ख) शैक्षिकमनोविज्ञानस्य क्षेत्राणि।

2. शिक्षामनोविज्ञानस्य विधयः

(क) प्रयोगात्मिका विधिः

(ख) उपचारात्मिका विधिः

(ग) डिफरेंशियल विधिः

अन्वितिः 2 –

(1) मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्ये मानवविकासः–

(क) वंशानुक्रमः वातावरणं च – अर्थः, परिभाषा, सम्बन्धः।

(ख) एतयोः अध्ययनस्य आवश्यकता एवं प्रभावकारकाणि।

(2) वृद्धिःविकासश्च –

(क) सम्प्रत्ययः भिन्नता, वैशिष्ट्यानि एवं विकासक्रमे परिवर्तनानि।

(ख) विकासस्यप्रक्रिया एवं प्रभावकारकाणि, सिद्धान्तः एवं शैक्षिक महत्ता च।

V. M

अन्वितिः 3–

(1) बाल्यावस्थायां एवं किशोरावस्थायां वृद्धिः विकासश्च।

(क) शारीरिकः (ख) सामाजिकः (ग) संवेगात्मकः (घ) मानसिकः (ङ) सम्प्रत्ययात्मक–विकासः

(च) सृजनात्मक–विकास (छ) भाषायी–विकासः(ज) तार्किक–बुद्धिविश्लेषणम्

(2) वैयक्तिकभिन्नताः

(क) सम्प्रत्ययः क्षेत्राणि च।

(ख) वैयक्तिक–भिन्नतायाः निर्धारकतत्त्वानि।

(ग) शैक्षिक–कार्यक्रमाणां आयोजने वैयक्तिक भिन्नतायाः महत्त्वं

अन्वितिः 4– सृजनात्मकता

(क) सम्प्रत्ययः

(ख) वैशिष्ट्यम्

(ग) सृजनात्मकतायाः विकासः

(घ) शिक्षायां सृजनात्मकतायाः महत्त्वम्

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1.	भटनागर, नरेश	–	शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी प्रकाशन मेरठ, उ0प्र0
2.	गुप्ता एस0पी0	–	शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक मन्दिर, विश्वविद्यालय मार्ग
3.	माथुर एस0 एस0	–	शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ0प्र0
4.	सारस्वत मालती	–	शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन इलाहाबाद
5.	मिश्रा डॉ0 लोक मान्य	–	आधुनिक शिक्षामानोविज्ञान मृगानी प्रकाशन लखनऊ।
6.	डॉ0 सिंह फतेह	–	शिक्षा मनोविज्ञानम् आदित्य प्रकाशनम् जयपुर।

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

प्रथम सत्रार्द्धः

भारतीयशिक्षायाः समसामयिकसन्दर्भः (प्रथमभागः)

प्रश्नपत्रम् CC-04

पूर्णांक – 100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. स्वतन्त्रतापूर्वभारते शिक्षायाः विकासस्य ज्ञाने समर्थाः भविष्यन्ति।
2. स्वतन्त्रोत्तरभारते शिक्षायाः विकासस्य ज्ञाने समर्थाः भविष्यन्ति।
3. शिक्षायाः विकासस्य सन्दर्भे आलोचनात्मकदृष्टेः विकासः।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– भारते शिक्षा–

वैदिककालः, बौद्धकालः, मध्यकालश्च।

अन्वितिः 2 – मैकाले कार्यवृत्तम् (1835)

- एडममहोदयस्य प्रतिवेदनं परामर्शश्च।
- वुडघोषणापत्रम् – (1854)
- भारतीय–शिक्षा–आयोगः (1882) अस्य परामर्शः तथा शिक्षायाः विकासस्योपरि प्रभावः।

अन्वितिः 3– लार्डकर्जनमहोदयस्य शिक्षानीतिः, राष्ट्रियचेतनायाः विकासः, राष्ट्रिय–शिक्षा–आन्दोलनम्।

- सैडलर–आयोगस्य प्रतिवेदनम् (1917) अस्यावश्यकप्रावधानानि।
- हर्टाग समितिः (1929) अस्य परामर्शः।

अन्वितिः 4– शिक्षायाः वर्धा–योजना (1937)

- सार्जेण्ट प्रतिवेदनम् (1944)
- विश्वविद्यालय–शिक्षा–आयोगः (1948–49)
- माध्यमिक–शिक्षा–आयोग (1952–53)

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1- Sodhi T.S. 1988 - A text book of comparative Education New Delhi A.I.U. IGNOU
2- Denis I 1986 - School Curriculum Planning Landon.

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

प्रथम सत्रार्द्धः

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध (प्रथम भागः)

प्रश्न पत्र सं0–EC-A1

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य छात्र–

1. छात्र शैक्षिक प्रवन्धन का सम्प्रत्यय एवं प्रासंगिकता को समझने में समर्थ हो सकेगें।
2. छात्र शैक्षिक प्रवन्धन की विभिन्नरतरों पर प्रक्रिया को जान सकेंगे।
3. छात्र शिक्षा के वित्तीय स्रोत एवं समस्याओं को समझने समर्थ हो सकेगे।
4. योजना एवं क्रियान्वन को जानने मे छात्रों की सहायता करना।

ईकाई–1

1. शैक्षिक प्रशासन के अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, आवश्यकता एवं कार्य।
2. प्रवन्धन, प्रशासन, पर्यवेक्षण एवं योजना के बीच अर्न्तसम्बन्ध।

ईकाई–2

3. शैक्षिक प्रशासन सम्बन्धी आधुनिक सम्प्रत्ययों का विकास, प्रशासन एक प्रक्रिया के रूप में, प्रशासन का मानवीय संसाधन से सम्बन्ध
4. कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति

ईकाई–3

5. **शिक्षक प्रशासन में विशेष प्रचलन**
   (क) निर्णय लेना
   (ख) संस्थागत वैधानिक क्रियाकलाप
   (ग) सांस्थनिक विकास
   (घ) पी0ई0आर0टी0
   (ड) उद्देश्यों के अनुसार प्रबन्धन (एम0ओ0बी0)

ईकाई–4

6. **नेतृत्व का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व**
   (क) नेतृत्व के सिद्धान्त
   (ख) नेतृत्त्व शैली
   (ग) नेतृत्त्व का मापन

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. मिश्रा मंजू – विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली
2. सिंह श्याम – विद्यालय संगठन एवं प्रबन्ध, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)
प्रथम सत्रार्द्धः
शैक्षिक तकनीकी (प्रथम भागः)
प्रश्न पत्र सं0–EC-B1

पूर्णाक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. शैक्षिक तकनीक के सम्प्रत्यय, क्षेत्र एवं विशेषताओं को समझ सकेगे।
2. छात्र कठोर तन्त्र एवं कोमलतन्त्र में अन्तर कर सकेगें।
3. शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अभिक्रमण में अन्तर कर सकेगे।
4. छात्र अभिक्रमित अधिगम के विभिन्न प्रकारों को सीख सकेगें।।

ईकाई–1

1. शैक्षिक तकनीक, अर्थ, सम्प्रत्यय एवं क्षेत्र शैक्षिक प्रणाली विश्लेषण और इसकी विशेषताएं

ईकाई–2

2. शैक्षिक तकनीक के तत्व
   हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर
3. शैक्षिक तकनीकि में मल्टी मीडिया, उपागम, अर्थ उपयोग एवं सीमाएं।

ईकाई–3

4. शिक्षण के मॉडल–शिक्षण विभिन्न प्रकार--सिद्धान्त निरूपण, निर्देशन, अनुबन्धन एवं प्रशिक्षण
5. शिक्षण की आवश्यकता, शिक्षण से पूर्व, शिक्षण के पश्चात्
6. विभिन्न स्तरों पर शिक्षण स्मृति, समझ एवं शिक्षण अधिगम आयोजन के स्तर पर।

ईकाई–4

7. अभिक्रमित शिक्षण उदभव, सिद्धान्त एवं विशेषताएं
8. प्रकार– रेखीय, शाखीय एवं मैथेटिक्स
9. अभिक्रमित शिक्षण का विकास–तैयारी, लेखन परीक्षण एवं मूल्यांकन

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 पी0एन0 सिंहल एवं डॉ0 हरेन्द्र सिंह – शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकताएं एवं प्रबन्ध अर्णव प्रकाशन मन्दिर दिल्ली
2. श्रीमती जैन स्वाती – शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्ध साधना प्रकाशन मेरठ
3. डॉ0 अग्रवाल एस0 गौड यशवन्ती – भावी शिक्षक एवं शिक्षा, श्री कविता प्रकाशन जयपुर

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)
द्वितीय सत्रार्द्धः
शिक्षायाः दार्शनिकाधाराः (द्वितीय भागः)
प्रश्नपत्र –CC-05

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः –

1. समसामयिकभारतीयशिक्षायां भारतीयदार्शिनिकानां योगदानस्य अववोधने समर्थाः भवेयुः।
2. अस्माकं जीवने शैक्षिकमूल्यानां प्रभावस्य् अववोधने समर्थाः भवेयुः।
3. भारतीयसंविधानद्वारा शिक्षायै कृतप्रावधानानाम् अववोधने समर्थाः भवेयुः।
4. लोकतन्त्रस्य वैशिष्ट्यानां कार्याणां च ज्ञाने समर्थाः भवेयुः।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– पाश्चात्यदर्शनस्य मुख्याः विचारधाराः–

यथार्थवादः, तार्किकसापेक्षवादः, अस्तित्ववादः, मार्क्सवादश्च। ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा, तत्त्वमीमांसा एतासां शिक्षायाः उद्देश्यानि विषयवस्तु शिक्षणविधीनां सन्दर्भे शैक्षिकनिहितार्थः।

अन्वितिः 2 – भारतीयदार्शनिकानां शैक्षिकविचारः तथा योगदानं–

विवेकानन्दः, गान्धीः, टैगोरः, अरविन्दः, जे.कृष्णमूर्तिः दयानन्दसरस्वती च।

अन्वितिः 3– भारतीयसंविधानस्य परिप्रेक्ष्ये मूल्यानां विकासः तेषां शैक्षिकनिहितार्थः च।

अन्वितिः 4 – ज्ञानमीमांसायाः विशेष सन्दर्भः ज्ञानस्य प्रकृतिः ज्ञानप्राप्तेः प्रक्रिया शिक्षायाः सामाजिकदर्शनं च।

(क) लोकतन्त्रम्, उत्तरदायित्वम्।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0 – शिक्षा दर्शन
2. सक्सेना आर0एस0 – शिक्षा सिद्धान्त
3. रस्क0 आर0 एस0 – शिक्ष के दार्शनिक सिद्धान्त
4. पाण्डेय आर0 एस0 – शिक्षा दर्शन

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

द्वितीयसत्रार्द्धः

शिक्षायाः समाजशास्त्रीयाधाराः (द्वितीयभागः)

प्रश्नपत्र–CC-06

पूर्णांक– 100

(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. आर्थिकसामाजिकरूपेण वंचितवर्गाणा चयनं करिष्यान्ति, विशिष्य अनुसूचितजाति–जनजाति–महिला–ग्रामीणजनसंख्याना परिप्रेक्ष्ये।
2. शिक्षालोकतन्त्रसम्बन्धे अवबोधः।
3. सामाजिकरणे सामाजिकविकासे च शिक्षायाः योगदानस्योल्लेखः।
4. समानतायाः शैक्षिकावसरणां च समानताविषये ज्ञानप्रदानम्।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– सामाजिकपरिवर्तनस्य सिद्धान्ताः–

(क) सामाजिक–आर्थिककारकाणि शिक्षायाम् एतेषां प्रभावः च।

(ख) सामाजि परिवर्तनम् आर्थिकसामाजिकरूपेण वंचितवर्गः, विशेषरूपेण अनुसूचितजाति–जनजाति–महिला–ग्रामीणजनसंख्या–निरीहजनानां परिप्रेक्ष्ये।

अन्वितिः 2 – शिक्षायाः सम्बन्धः–

(क) लोकतन्त्रम्।

(ख) स्वतन्त्रता।

(ग) राष्ट्रवादः राष्ट्रियसमन्वयश्च।

(घ) अन्ताराष्ट्रियसद्भावः।

अन्वितिः 3– शिक्षा समाजश्च –

(क) सामाजिक प्रणालीरूपेण।

(ख) सामाजिकरणप्रक्रियारूपे।

(ग) सामाजिकविकासप्रक्रियारूपे।

(घ) शिक्षा राजनीतिश्च।

(ङ) शिक्षा धर्मश्च।

अन्वितिः 4 – शैक्षिकावसराणां समानता–

(क) सामाजिकसमता तथा च शैक्षिकावसराणां समानता सन्दर्भे शिक्षा।

(ख) शैक्षिकावसराणां समानता, तस्याः सामाजिकविकासे प्रभावश्च।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. जायसवाल सीताराम – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
2. मिश्र डॉ० भास्कर – शिक्षा संस्कृति, एक सन्दर्भ
3. पाठक डॉ० आर० पी० – शिक्षाशास्त्र एक परिचय
4. सक्सेना एन०आर० स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

द्वितीयसत्रार्द्धः

शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधाराः (द्वितीयभागः)

प्रश्नपत्र– CC-07

पूर्णांक– 100

(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. बुद्धेः सम्प्रत्ययः एवं बुद्धिप्रकृतेः ज्ञानप्रदानम्।
2. बुद्धिसिद्धान्तानाम् आलोचनात्मकमध्ययनम्।
3. व्यक्तित्वमेवं व्यक्तित्त्वनिर्धारकतत्त्वानां ज्ञानप्रदानम्।
4. अधिगमस्य सम्प्रत्ययः एवं वैशिष्ट्यज्ञानम्।
5. अभिप्रेरणायाः अवधारणाज्ञानम्।
6. मानसिकस्वास्थ्य–मानसिकस्वास्थ्यविज्ञान–समायोजनप्रक्रियायाश्च व्याख्याकरणम्।

पाठ्यवस्तु–

अन्वितिः 1– अधिगमः–

(क) अर्थः, परिभाषा, अधिगमस्य प्रभावककारकाः।

(ख) अधिगमसिद्धान्ताः, एतेषां शैक्षिकनिहितार्थाश्च।

(1) पावलवमहोदयस्य शास्त्रीयानुबन्धनम्। (2) स्कीनरमहोदयस्य क्रियाप्रसूताधिगमः।

(3) अन्तर्दृष्टिसिद्धान्तः। (4) हल्लमहोदयस्य पुनर्वलनसिद्धान्तः।

(5) लेविनमहोदयस्य क्षेत्रसिद्धान्तः। (6) गैनेमहोदयस्य अधिगमपदानुक्रमिता।

अन्वितिः 2 – अभिप्रेरणा–

(क) अर्थः, परिभाषा, अभिप्रेरणायाः प्रभावककारकाः सम्प्रत्ययश्च।

(ख) अभिप्रेरणायाः सिद्धान्ताः।

(1) शारीरिकसिद्धान्तः।

(2) मुरमहोदयस्य आवश्यकतासिद्धान्तः।

(3) मनोविश्लेषणात्मकसिद्धान्तः।

(4) मेस्लोमहोदयस्य आवश्यकतापदानुक्रमितायाः सिद्धान्तः।

अन्वितिः 3– बुद्धिः –

(क) अर्थः, सम्प्रत्ययः, परिभाषाप्रकृतिश्च।

(ख) सिद्धान्ताः

(1) द्विकारकासिद्धान्तः (स्पीयरमेन)। (2) बहुकारकसिद्धान्तः।

(3) समूहकारकसिद्धान्तः। (4) गिलफोर्डमहोदयस्य बुद्धिसंरचना।

(ग) बुद्धेः मापनम् (द्वे वाचिकपरीक्षणे द्वे अवाचिकपरीक्षणे)

अन्वितिः 4 – व्यक्तित्त्वम् –

(1) अर्थः सम्प्रत्ययः, परिभाषाः एवं निर्धारकतत्त्वानि।

(2) प्रकाराः गुणसिद्धान्ताश्च।

(3) व्यक्तित्त्वपरीक्षणम् (आत्मनिष्ठम् एवं प्रक्षेपीविधयः)

(ख) मानसिकस्वास्थ्यं विज्ञानं च–

(1) अभिप्रायः उद्देश्यानि, वैशिष्ट्यानि, प्रभावकारकाश्च।

(2) समायोजनं समायोजनप्रक्रिया च।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. भटनागर, नरेश – शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी प्रकाशन मेरठ, उ0प्र0
2. गुप्ता एस0पी0 – शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक मन्दिर, विश्वविद्यालय मार्ग
3. माथुर एस0 एस0 – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ0प्र0
4. सारस्वत मालती – शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन इलाहाबाद
5. मिश्रा डॉ0 लोक मान्य – आधुनिक शिक्षामनोविज्ञान मृगाक्षी प्रकाशन लखनऊ।
6. डॉ0 सिंह फतेह – शिक्षा मनोविज्ञानम् आदित्य प्रकाशनम् जयपुर।

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

द्वितीय सत्रार्द्धः
भारतीयशिक्षायां समसामयि सन्दर्भः (द्वितीयभाग)
प्रश्नपत्रम् –CC-08

पूर्णांक – 100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि–

1 छात्रेषु समानभारतीयशैक्षिकाअभिमुखीकरणं प्रति समीक्षात्मकक्षमतोत्पादनम्।
2 भारतीयशैक्षिकशाखारूपेण शिक्षायाः विकासं प्रति समीक्षात्मकबोधोत्पादनम्।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

(1) भारतीयशिक्षायोगः – 1964–66

(2) राष्ट्रियशिक्षानीतिः – 1986

(3) संशोधितराष्ट्रियशिक्षानीतिः –1992

(4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020

अन्वितिः 2 –

(4) शिक्षायाः सार्वभौमिकरणम् अन्यसम्बन्धिताः विषयश्च यथा– प्राथमिकशिक्षायां साक्षरता, पूर्णता चेत्यादीनि।

(5) शिक्षायाः व्यावसायीकरणम्।

(6) बालिकानां शिक्षा।

अन्वितिः 3–

(7) सामाजिकरूपेण वंचितवर्गाः – अनुसूचितजातिः, जनजातिः, अन्यपृष्ठवर्तिजातीनां शिक्षा।

(8) शिक्षायां गुणवत्ता तथोत्कृष्टता सम्बन्धिविषयाः।

(9) शैक्षिकावसराणां समानताप्रदायकाः सामाजिकसमतासम्बद्धाः विषयाः।

अन्वितिः 4

(10) दूरस्थशिक्षा प्रणाली, मुक्ताधिगम (ओपन लार्निंग) सम्बन्धिताः विषयाः।

(11) जीवनकौशलानां, मानवमूल्यानां कृते शिक्षा।

(12) शिक्षायाः माध्यमः (भाषाचयनसम्बद्धाः विषयाः त्रिभाषासूत्रम्।

(13) वैश्विकसन्दर्भे भावात्मकैकता तथा चान्ताराष्ट्रियावबोधः।

द्वितीय सत्रार्द्धः
शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध (द्वितीय भागः)
प्रश्न पत्र –EC-A2

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य--

1. छात्रों को शिक्षा के प्रबन्ध एवं उसकी महत्ता से परिचित कराना।
2. विभिन्न स्तरों पर एक प्रक्रिया के रूप में विद्यालय प्रबन्धन को समझने मे छात्रों की सहायता करना।
3. छात्रों के शिक्षा एवं शैक्षिक प्रक्रिया की विभिन्न समस्याओं के प्रति समझ उत्पन्न करना।
4. शिक्षा के संसाधनों एव शैक्षिक वित्तीय समस्याओं को जानने में छात्रों की सहायता करना।
5. छात्रों को नियोजन एवं व्यवस्थापन के बारे में सीखने के लिए प्रेरित करना

ईकाई–1

1. **शैक्षिक नियोजन–**
   (क) अर्थ,प्रकृति एवंआवश्यकता।
   (ख) शैक्षिक योजना की महत्ता।
   (ग) शैक्षिक योजना की समस्याएं
   (घ) शैक्षिक योजना के उपागम।

ईकाई–2

2. **शैक्षिक नियोजन के प्रकार–**
   (क) सांस्थानिक योजना
   (ख) परिप्रेक्ष्यात्मक योजना

ईकाई–3

3. **शैक्षिक पर्यवेक्षण**
   (क) शैक्षिक पर्यवेक्षण का अर्थ एवं प्रकृति
   (ख) पारम्परिक एवं आधुनिक पर्यवेक्षण
   (ग) शैक्षिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता एवं कार्य

ईकाई–4

4. **पर्यवेक्षण–**
   (क) पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम की योजना, व्यवस्थापन एवं क्रियान्वयन
   (ख) शैक्षिक पर्यवेक्षण के सिद्धान्त

सन्दर्भ ग्रन्थ –

3. मिश्रा मंनू – विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली
4. सिंह श्याम – विद्यालय संगठन एवं प्रबन्ध, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली

आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्रम् (प्रथम वर्ष)

द्वितीय सत्रार्द्ध:

शैक्षिक तकनीकी (द्वितीय भाग:)

प्रश्न पत्र सं0–EC-B2

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को शैक्षिक उददेश्यों के निर्धारण के कौशल से परिचित कराना।
2. सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से छात्रों को शिक्षण कौशल को सीखने मे सक्षम बनाना।
3. शिक्षक व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु शैक्षिक तकनीकि के प्रयोग में कुशल बनाना।
4. विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन उपकरणों के निर्माण की योग्यता विकसित करना।

ईकाई–1

1. शिक्षण व्यवहार का परिशोधन–सूक्ष्मशिक्षण, फ्लैण्डर का अन्तःक्रिया विश्लेषण एवं अनुरूपण।
2. सम्प्रेषण प्रक्रिया– सम्प्रेषण का सम्प्रत्यय, सिद्धान्त सम्प्रेषण के प्रकार एवं बाधाएं, साधन एवं अवरोधन, कक्षागत सम्प्रेषण (अन्तःक्रिया, वाचिक एवं अवाचिक)

ईकाई–2

3. शिक्षण के मॉडल्स– सम्प्रत्यय, शिक्षण मॉडल के विभिन्न वर्ग
4. निर्देशन प्रणाली का निर्माण– निर्देशन उददेश्यो का निमार्ण एवं कार्य विश्लेषण

ईकाई–3

5. निर्देशात्मक युक्तियों का निर्माण– व्याख्यान, दलशिक्षण, परिचर्चा वादविवाद, सम्मेलन, टयूटैरियल एवं ब्रेन स्टामिंग।
6. मूल्यांकन परीक्षण का निर्माण–निकष सन्दर्भित एवं मानक सन्दर्भित परीक्षण।

ईकाई–4

7. दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक तकनीकि का प्रयोग।
8. दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम प्रणाली में भेद।
9. दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायक सेवाएं
10. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया
11. दूरस्थ शिक्षा में परामर्श।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 पी0एन0 सिंहल एवं डॉ0 हरेन्द्र सिंह – शैक्षिक तकनीकि की आवश्यकताएं एवं प्रबन्ध अर्णव प्रकाशन मन्दिर दिल्ली
2. श्रीमती जैन स्वाती – शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्ध साधना प्रकाशन मेरठ
3. डॉ0 अग्रवाल एस0 – भावी शिक्षक एवं शिक्षा, श्री कविता प्रकाशन जयपुर गौड यशवन्ती

V.M.Jw

तृतीय सत्रार्द्धः

शिक्षायाम् अनुसन्धानप्रविधिः (प्रथम भाग)

प्रश्नपत्रसंख्या–**CC-09**

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि –छात्राः

1. अनुभवतर्कयोः द्वारा वैज्ञानिकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
2. शैक्षिकानुसन्धानस्य अर्थ–क्षेत्र–प्रकृति–उद्देश्यादीनिं व्याख्यातुं शक्ष्यन्ति।
3. शैक्षिकानुसन्धाने नवप्रवृत्तिं ज्ञास्यन्ति।
4. अनुसन्धानसमस्यायाः अर्थ–प्रकृति–स्रोतांसि च व्याख्यातुं शक्ष्यन्ति।
5. परिकल्पनायाः सम्प्रत्ययं सम्बन्धितसाहित्याध्ययनस्य महत्वं चावगन्तुं शक्ष्यन्ति।
6. प्रदत्तसंकलनस्य शोधोपकरणानां निर्माणस्य च विधिं ज्ञास्यन्ति।
7. न्यादर्शस्य अर्थं जनसंख्यायाः स्वरूपं च ज्ञास्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

1. **वैज्ञानिकज्ञानस्य प्राप्तेः विधयः –परम्परा, अनुभवः, तर्कः, आगमनात्मकः निगमनात्मकश्च।**
2. **शैक्षिकानुसन्धानस्य प्रकृतिः क्षेत्रं।**

(क) अर्थः, प्रकृतिः सीमानश्च।

(ख) शैक्षिकानुसन्धानस्य आवश्यकताः उद्देश्यानि च ।

(ग) वैज्ञानिकान्वेषणस्य सिद्धान्तः विकासश्च।

(घ) मूलभूतम् अनुप्रयोगात्मकं क्रियात्मकं चानुसन्धानम्।

(ङ) गुणात्मकं मात्रात्मकं चानुसन्धानम्।

अन्वितिः 2 – **शोधसमस्याः निर्माणम्** –

(क) समस्यायाः अभिज्ञानाय स्रोतांसि निकषश्च।

(ख) चराणाम् अभिज्ञानं क्रियान्वयनं च।

(ग) सम्बन्धितसाहित्याध्ययनं महत्त्वं विभिन्नस्रोतांसि च । (अन्तर्जालादीनि)

(घ) अनुसन्धाने प्राक्कल्पनानां स्वरूप–निर्माणम्।

अन्वितिः 3– **प्रदत्तानां संकलनम्** –

(क) प्रदत्तस्य प्रकारः, गुणात्मकः, मात्रात्मकश्च।

(ख) शोधोपकरणानि, विधयः, विशेषताश्च, उत्तमशोधोपकरणस्य गुणाः। प्रश्नावली, साक्षात्कारः, अवलोकनम्, समाजमिति प्रविधयः प्रक्षेपी–विधयश्च।

अन्वितिः 4– **न्यादर्शः – जनसंख्यान्यादर्शयोः अर्थः, सम्प्रत्ययः, विशेषताः प्रकारश्च।**

(क) उत्तमन्यादर्शस्य गुणाः सोपानानि च।

(ख) न्यादर्शस्य विभिन्नविधयः –सम्भाव्य–असम्भाव्याश्च

(ग) न्यादर्शत्रुटयः

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. सिंह वैस नरेन्द्र – शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, पदमा प्रकाशन जयपुर एवं प्रीति अरोड़ा
2. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसन्धान, ओमेगा, प्रकाशन नई दिल्ली
3. प्रो0 श्रीवास्तव सी0वी0 –शैक्षिक अनुसन्धान की विधियां, अपोलो प्रकाशन, जयपुर डॉ0 शर्मा माता प्रसाद
4. डॉ0 शर्मा सुदेश कुमार – शैक्षिक–प्रविधि–शास्त्रम्, दीप माधव प्रकाशन, जयपुर

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)
तृतीय सत्रार्द्धः
शिक्षायां प्रदत्तविश्लेषणस्य विधयः (प्रथम भाग)
प्रश्नपत्रसंख्या–CC-10

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. सांख्यिक्याः विभिन्नप्रकाराणां मापानां च ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
2. संख्याशास्त्रस्य ज्ञानम् अनुप्रयोगचं ज्ञास्यन्ति।
3. केन्द्रीयप्रकृतेः मापनम् उच्चस्तरीयसांख्यिक्याः ज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।
4. अप्राचलिकपरीक्षणस्य ज्ञानम् अनुप्रयोगं च प्राप्स्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

- शैक्षिकप्रदत्तानां प्रकृतिः – सांख्यिक्याः सम्प्रत्ययः, विशेषताः, प्रकारः, गुणात्मकः, मात्रात्मकः, वर्णनात्मकः आनुभविकश्च।
- प्रदत्तानां व्यवस्थापनम् – आवृतिवितरणं चित्रीयप्रदर्शनं च।
- केन्द्रीयप्रवृत्तिमापनम् – सम्प्रत्ययः, विशेषताः च। मध्यमान–मध्यांकबहुलांकानां गणितीयमापनम्।

अन्वितिः 2 –

- विचरणशीलतायाः मापनम् – सम्प्रत्ययः विशेषताश्च, अभिकलनविस्तारः।
- प्रसारः, मध्यमानविचलनम्, चतुर्थांशविचलनम् मानकविचलनं विचलनगुणाश्च।
- सापेक्षिकस्थितेः मापनानि–दशांशकमानं प्रतिशतांकश्च।

अन्वितिः 3–

- अप्राचलिकपरीक्षणमः – अर्थः अवधारणाश्च।
- विधयः काईवर्गपरीक्षणम्, आसंगसारणी चिह्नपरीक्षणं च।

अन्वितिः 4–

- सामान्यप्रायिकतावक्रमः – अर्थः, विशेषताः प्रयोगश्च।
- प्रसामान्यताया विचलनं विकृतवितरणं ककुदता च।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा शशी प्रभा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क शर्मा मधुलिका – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
2. शर्मा डॉ0 आर0 ए0 – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
3. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
4. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली
5. डी.एन. श्रीवास्तव – सांख्यिकी एवं मापन,अग्रवाल प्रकाशन

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)

तृतीयसत्रार्द्धः

तुलनात्मक–शिक्षा एवं पाठ्यचर्याविकासः (प्रथमभागः)

प्रश्नपत्रम् –CC-11

पूर्णांक – 100

(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि–

1. छात्राः समसामयिकशैक्षिकव्यवस्थां तुलनात्मकशिक्षायाः अवबोधे सक्षमाः भविष्यन्ति।
2. छात्राः विभिन्नदेशेषु प्रचालितशैक्षिकव्यवस्थां ज्ञातुं शक्ष्यन्ति।
3. प्राथमिकशिक्षायाः सार्वभौमीकरणं भारतदेशे एतस्य शैक्षिकनिहितार्थं च ज्ञातुं शक्ष्यन्ति।
4. छात्रान माध्यमिकशिक्षायाः सम्प्रत्ययस्य एवम् अस्य व्यवसायीकरणस्य महत्त्वस्य ज्ञानप्रदानम्।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

- तुलनात्मकशिक्षायाः सम्प्रत्ययः उद्देश्यानि च।
- तुलनात्मकशिक्षायाः आवश्यकता एवं क्षेत्राणि।
- शिक्षाव्यवस्थायाः प्रभावकारि–कारकाः।

अन्वितिः 2 –

- तुलनात्मकशिक्षायाः ऐतिहासिकविकासः
- तुलनात्मकशिक्षायाः उपागमाः–ऐतिहासिकोपागमः, दार्शनिकोपागमः, समाजशास्त्रीयोपागमः।
- शिक्षाव्यवस्थायाः महत्त्वपूर्ण प्रावधानानि– यू.एस.ए., यू.के. एवं भारतस्य सन्दर्भे।

अन्वितिः 3–

- भारत–ब्रिटेन–अमरीकादेशेषु पूर्वप्राथमिकशिक्षा।
- भारत–ब्रिटेन–अमरीकादेशेषु प्राथमिकशिक्षा (उद्देश्यानि, विषयवस्तूनि, शिक्षणविधयः एवं मूल्यांकनम्)
- प्राथमिकशिक्षायाः सार्वभौमीकरणम् एवं भारतदेशे अस्य शैक्षिकनिहितार्थः।

अन्वितिः 4

- भारत–ब्रिटेन–अमेरिकादेशेषु माध्यमिकशिक्षा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. **Cramer I.F. and Brown G.S (1965)- contemparary Education A comparative study of National system, New york.**

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)

तृतीयसत्रार्द्धः

शैक्षिकं व्यावसायिकं च निर्देशनम्

प्रश्नपत्रम् –CC-12

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्रेषु–

1. समूहे, समूहाय, समूहेन सह कार्यस्य महत्त्वं ज्ञास्यन्ति।
2. वैयाक्तिक भिन्नतायाः सह कार्यस्य महत्त्व ज्ञास्यन्ति।
3. शैक्षिक–व्यावसायिकक्षेषु छात्राः समुचितविकल्पस्य चयनं कुर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
4. छात्राः जीवनस्य, परितः विद्यानस्य संसारस्यावगमने सक्षमाः स्युः।
5. छात्राः जीवने शिक्षायाः व्यवसायचयनस्य च महत्तां ज्ञास्यन्ति।
6. छात्राः तदपि नूनं ज्ञास्यन्ति यत् प्रत्येकं व्यक्तिः निजाद्वितीयक्षमताद्वारा अद्वितीययोगदानेन समाजस्य बहुमुख विकासे सहायिका भवितुं शक्नोति।
7. छात्राः व्यक्ते वैयक्तिकावश्यकताः अवगमिष्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

1. निर्देशनम्–अर्थः, सम्प्रत्ययः, सिद्धान्ताः, आवश्यकता महत्त्वं चेति।
2. निर्देशनस्य प्रकाराः–शैक्षिकं, निर्देशनम्, व्यावसायिकं निर्देशनम्, व्यक्तिगत निर्देशनंचेति।
3. विद्यालयेषु निर्देशनसेवानामोजनम्, विद्यालयेषु प्रभाविनिर्देशनसेवानामायोजनस्यावश्यकता, सिद्धान्ताः, सोपनानि, युक्तयश्चेति।

अन्वितिः 2 –

1. समूहनिर्देशनम्– अर्थः, लाभाः, सिद्धान्ताः, समूहनिर्देशनस्य प्रकाराः च।
2. विशिष्ट–बालकानां निर्देशनम्, दिव्यांगा–प्रतिभाशाली, मन्दबुद्धिबालकाः।
3. परामर्शः–अर्थः, आवश्यकता, प्रक्रिया, प्रकाराश्चेति।
4. निदेशात्मक परामर्शः, अनिदेशात्मकपरामर्शः, ऐच्छिकपरामर्शश्चसम्प्रत्ययः, लाभाः, सीमाश्च।

अन्वितिः 3–

1. व्यावसायिक–सूचना–अर्थः, आवश्यकता, व्यावसायिकसूचनाप्रदानस्य विधयः, भारते व्यावसायिकसूचनायाः स्रोतांसि।
2. वृत्तिकं–विश्लेषणम्–अर्थः, प्रकाराः, उद्देश्यानि च।
3. वृत्तिकी सन्तुष्टिः–अर्थः, कार्यसन्तुष्टिं प्रभावयन्ति कारकाणि।

अन्वितिः 4 –

1. नियोजनम्, सेवाः, अर्थः, कार्याणि, सिद्धान्ताः।
2. अनुवर्त्तिसेवाः, अर्थः, उद्देश्यानि, विशेषताः।
3. सूचनासम्बन्धिप्रदत्तानां सग्रंहस्य प्रमापीकृताप्रमापीकृत–तकनीकी, व्यक्ति–अध्ययनम्, एनेक्डोटल, रिकार्ड्स (अभिलेखाः) निर्धारणयनी (रेटिंग स्केल) समाजजनितिविधिः, प्रश्नावली, निरीक्षणम्, साक्षात्कारः, संचयी–अभिलेखाः।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. डॉ. सीत्र ओबरायः – शैक्षिकं व्यावसायिकं निर्देशनम्, परामर्श, इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस।
2. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षायां निर्देशनं परामर्शः च, ओमेगा ,प्रकाशनम् नव देहली
3. डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी – निर्देशनं परामर्शश्च आदित्य बुक सेण्टर, वाराणसी।

V.M.Jw

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)

तृतीय सत्रार्द्धः

अध्यापक शिक्षा (प्रथम भाग:)

प्रश्न पत्र सं0–EC-A3

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य–

1. भारत में अध्यापक शिक्षा के अर्थ और सम्प्रत्यय को जान सकेंगें।
2. छात्र अध्यापक शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य एवं ऐतिहासिकता को जान सकेंगें।
3. शिक्षण व्यवसाय एवं अध्यापक शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

ईकाई–1

1. **अध्यापक शिक्षा का अर्थ एवं सम्प्रत्यय**

(क) अध्यापक शिक्षा का ऐतिहासिक विकास।

(ख) कोठारी आयोग, नई शिक्षा नीति 1986 कार्य योजना संशोधित नई शिक्षा नीति 1992 में अध्यापक शिक्षा के लिए सुझाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति NEP 2020 में अध्यापक शिक्षा।

ईकाई–2

2. **अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य एवं उद्देश्य**

(क) प्राथमिक स्तर पर

(ख) माध्यमिक स्तर पर

(ग) महाविद्यालयीय स्तरपर

ईकाई–3

3. शिक्षा का व्यावसायिकरण
4. शिक्षक संस्थाओं के लक्ष्य एवं उद्देश्य
5. व्यावसायिक संस्थाओं की आवश्यकता
6. कर्मचारी उन्मुखी कार्यक्रम

ईकाई–4

7. शिक्षक कार्य निष्पादन मूल्यांकन
8. अध्यापक शिक्षा का इन्टर्नशिप
9. सेवा पूर्व–अध्यापक शिक्षा
10. सेवारत–अध्यापक–शिक्षा

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शास्त्री के0एन0 – अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, रोहिणी दिल्ली
2. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
3. महर्षि सन्तोष कुमार – अध्यापक शिक्षा, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता का विकास, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम (द्वितीय वर्ष)
तृतीय सत्रार्द्ध
विशिष्ट शिक्षा (प्रथमभाग:)
प्रश्न पत्र सं0–EC-B3

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य–

1. छात्र विशिष्ट बालक के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेगें।
2. छात्र विशिष्ट बालकों की आवश्यकता एवं समस्याओं को जान सकेगें।
3. भारत मे विशिष्ट शिक्षा के अर्थ एवं क्षेत्र को जान सकेगें।
4. समन्वित शिक्षा के अर्थ की व्याख्या कर सकेगें।
   विभिन्न प्रकार की विकलागता एवं इसके कारणों को समझ सकेंगे।

ईकाई–1

1. **विशिष्ट शिक्षा का सम्प्रत्यय एवं विषय वस्तु–**
   (क) विशिष्टता का प्रकार।
   (ख) सकारात्मक,नकरात्मक
   (ग) विशिष्ट बालकों की आवश्यकता।
   (घ) विशिष्ट बालकों की समस्याए।
2. **विशिष्ट शिक्षा की प्रकृति–**
   (क) विशिष्ट शिक्षा का इतिहास, उद्देश्य।
   (ख) विशिष्ट शिक्षा का क्षेत्र
   (ग) विशिष्ट शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रम
   (घ) समन्वित शिक्षा समग्र/समावेशी शिक्षा।

ईकाई–2

3. विकलांग बालकों की शिक्षा
   (क) सम्प्रत्यय
   (ख) विशेषताए
   (ग) विकलागता के कारण बाधाए

ईकाई–3

4. मन्दबुद्धि बालकों की शिक्षा
   (क) सम्प्रत्यय
   (ख) वर्गीकरण
   (ग) मन्दबुद्धि के कारण अध्ययन मे बाधाएं
   (घ)मंदबुद्धि बालकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम
   (ङ) मंदबुद्धि बालको के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ईकाई–4

5. **दृष्टिबाधित बालको की शिक्षा**
   (क) सम्प्रत्यय एवं विशेषताए
   (ख) अन्धता की श्रेणी–दृष्टिदोष के कारण एंव बाधाएं
   (ग) शैक्षणिक कार्यक्रम

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1- M.H.R.D (1993) - Seleted Education Study Ministry of Education Govt. of India.
2- Tiwari D.D (1975) - Education at the Crass Road' Chigh Publication Allahabad.

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)
चतुर्थ सत्रार्द्धः
शिक्षायाम् अनुसन्धानप्रविधिः (द्वितीयमागः)
प्रश्नपत्र– CC-13

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. छात्राः अनुसन्धानस्य मुख्यदृष्टिकोणेन सह परिचिताः भविष्यन्ति।
2. छात्राः अनुसन्धानप्रारूपस्य व्याख्याकरणे समर्थाः भविष्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– अनुसन्धानप्रविधयः–

(क) वर्णनात्मकोपागमः (सर्वेक्षणविधिः)
(ख) कार्योत्तरानुसन्धानम्।
(ग) प्रयोगशालानुसन्धानम्।
(घ) क्षेत्रानुसन्धानम्।
(ङ) ऐतिहासिकानुसन्धानम्।

अन्वितिः 2 – अनुसन्धानस्वरूपम्–

(क) अनुसन्धानस्यार्थः, सम्प्रत्ययः, प्रकारः उपादेयता च।

(ख) अनुसन्धानस्य विभिन्नोपरकरणानां निर्माणम्।

अन्वितिः 3– गुणात्मकानुसन्धानम्–

(क) एन्थोग्राफिक, एथनोग्राफिक्स, विकासात्मकम् अभिलेखविश्लेषणं च।

(ख) निष्कर्षस्य वैधता सीमानश्च। अनुसन्धानस्य वैधतायाः प्रभावकतत्वानि। अनुसन्धाननिष्कर्षाणां वैधतायाः संवर्धनोपायाः।

अन्वितिः 4 – अनुसन्धानप्रतिवेदनम्

(क) शोधसंक्षिप्तिकायाः निर्माणम्।

(ख) शोधप्रबन्धस्य लेखनं मूल्यांकनप्रक्रिया च ।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. सिंह बैस नरेन्द्र एवं प्रीति अरोड़ा – शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, पदमा प्रकाशन जयपुर
2. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसन्धान, ओमेगा ,प्रकाशन नई दिल्ली
3. प्रो0 श्रीवास्तव सी0वी0 डॉ0 शर्मा माता प्रसाद – शैक्षिक अनुसन्धान की विधियां, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
4. डॉ0 शर्मा सुदेश कुमार – शैक्षिक प्रविधि शास्त्रम्, दीप माधव प्रकाशन, जयपुर

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)

चतुर्थ सत्रार्द्धः

शिक्षायां प्रदत्तविश्लेषणस्य विधयः (द्वितीयभागः)

प्रश्नपत्र–CC-14

पूर्णांक–100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्राः–

1. प्रोडक्ट मोमेण्ट तथा डिफरेंस, सहसम्बन्धादीनां सम्प्रत्ययं विशेषताश्च ज्ञास्यन्ति।
2. रैंक डिफरेंस–सहसम्बन्ध–प्रोडक्टमोमेण्ट इत्येतेषु अन्तरं ज्ञास्यन्ति।
3. टी–परीक्षणम्–एनोवा इत्यनयोः अन्तरं ज्ञास्यन्ति।
4. रिग्रेसन एवं प्रिडिक्सन इत्यनयोः सम्प्रत्ययं ज्ञास्यन्ति।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1– **सहसम्बन्धः – अर्थः, विशेषताः, अवधारणा, गणितीयमापनम् उपयोगश्च।**

(क) प्रोडक्टमोमेन्टसहसम्बन्धः, रैंकडिफरेन्ससहसम्बन्धः, आंशिकः बहुस्तरीयश्च सहसम्बन्धः।

अन्वितिः 2 – **सार्थकमन्तरम् – अर्थः, विशेषता, प्रयोगक्षेत्रम्।**

(क) सार्थकतापरीक्षणम् – द्वयोः मध्यांकयोः अन्तरस्य सार्थकताज्ञानम्, द्वयोः प्रतिशतयोः अन्तरस्य सार्थकताज्ञानम्, . द्वयोः सहसम्बन्धयोः अन्तरस्य सार्थकताज्ञानम्।

(ख) **शून्यपरिकल्पना– अर्थः, प्रयोगः, परीक्षणं च।**

(ग) मानकत्रुटिः – टाइप 1 त्रुटिः टाइप 2 त्रुटिश्च।

अन्वितिः 3– **रिग्रेसन एवं प्रिडिक्सन – सम्प्रत्ययः, अर्थः, प्रयोगश्च।**

(क) टीपरीक्षणम्।

(ख) क्रान्तिकानुपातः।

अन्वितिः 4 – **प्रसरणविश्लेषणम् – (एफ– परीक्षणम्, एनोवापरीक्षणम्)**

(क) एनोवा एकमुखि – द्विमुखिपरीक्षणम्।
(ख) अर्थः अवधारणा, गणितीयमापनं प्रयोगश्च।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा शशी प्रभा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क शर्मा मधुलिका – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
2. शर्मा डॉ0 आर0 ए0 – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
3. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
4. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली

V.M.Jw

आचार्य (एम.ए.) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीयः वर्ष)
चतुर्थ सत्रार्द्धः
तुलनात्मक–शिक्षा एवं पाठ्यचर्याविकासः (द्वितीयःभाग)
प्रश्नपत्रम् –CC-15

पूर्णांक – 100
(बाह्य– 80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यानि छात्रेषु–

1. शैक्षिकप्रणाल्याः विभिन्नतथ्यानाम् उपागमानां च परिचयप्रदानम्।
2. विभिन्नदेशेषु प्रचलितायाः शिक्षाप्रणाल्याः प्रभावम् आत्मसातीकरणस्य कौशलप्रदानम्।
3. भारते शैक्षिकसमस्यासमाधाने शिक्षायाः अनुप्रयोगार्थं च दृष्टिकोणविकसनम्।
4. पाठ्यचर्यायाः पाठ्यक्रमस्य च सम्प्रत्ययेन सहैव पाठ्यक्रममूल्यांकनस्य प्रक्रियायाः परिचयप्रदानम्।
5. पाठ्यचर्यानिर्माणस्य महत्त्वपूर्णसिद्धान्तानाम् एवं पाठ्यचर्याप्रभाविकारकानां विभिन्नतथ्यानामवबोधनक्षमतायाः विकासः।
6. भारतीयशैक्षिकपाठ्यक्रमस्य क्षेत्रे नवीनविषयप्रणालीमनुसन्धातुम् अवबोधयितुं च साहाÕयकरणम्।

पाठ्यवस्तु –

अन्वितिः 1–

(क) ब्रिटेन–यू.एस.ए.–भारतदेशेषु उच्चशिक्षा।

(ख) दूरस्थशिक्षा–सम्प्रत्ययः, आवश्यकताश्च (ब्रिटेन–यू.एस.ए.–भारतदेशानां च विशेषसन्दर्भे)

अन्वितिः 2 –

(क) ब्रिटेन–यू.एस.ए.–भारतदेशेषु शैक्षिकं प्रशासनम्।

(ख) ब्रिटेन–यू.एस.ए.–भारतदेशेषु अध्यापकशिक्षा।

अन्वितिः 3–

(क) पाठ्यचर्यायाः एवं पाठ्यक्रमस्य सम्प्रत्ययः।

(ख) पाठ्यचर्यायाः विकासस्य सिद्धान्ताः

(ग) पाठ्यचर्याविकासं प्रभावितुं तत्त्वानि– दार्शनिकं, मनोवैज्ञानिकं, सामाजिकं एवं विषयक्षेत्रसम्बन्धितत्त्वानि।

अन्वितिः 4

(क) पाठ्यचर्याविकासस्य विभिन्नप्रतिमानानि (मॉडल) प्रशासनिकं, ग्रासरूटप्रतिमानं, प्रदर्शनं प्रणालीविशलेषणं च।

(ख) अधिगमोपलब्धिपरिप्रेक्ष्ये पाठ्यक्रममूल्यांकनस्य संप्रत्ययः, उपलब्धिपरीक्षणनिर्माणम् एवं समग्रमूल्यांकनम्, अंकप्रदानस्य रेटिंग प्रणाली, श्रेणीनिर्धारणम् च (ग्रेडिंग)।

V.M.

आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)
चतुर्थ सत्रार्द्धः
प्रश्न पत्र सं0–CC-16

पूर्णांक–100
(बाह्य–75, आन्तरिक–25)

लघु शोध प्रबन्ध

पाठयक्रम CC-16 चतुर्थ सेमेस्टर के अन्त में लघुशोध प्रबन्ध जमा किया जायेगा– 75 अंक लघुशोध प्रबन्ध– 25 अंक साक्षात्कार। सभी विद्यार्थियों के लिए लघुशोध अनिवार्य होगा। विभागीय शोध समिति द्वारा निर्धारित पर्यवेक्षक के निर्देशन में छात्र लघुशोधसम्बन्धी कार्य करेंगे। छात्रों को लघुशोध प्रबन्ध की तीन प्रतियां विभाग में चतुर्थ सत्रार्द्ध की परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व जमा करनी होगी। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित एवं बाह्य परीक्षक द्वारा सहमति के आधार पर साक्षात्कार की तिथि निश्चित की जायेगी। निर्धारित तिथि पर साक्षात्कार में उपस्थित न होने की दशा में उक्त छात्र आगामी सत्रार्द्ध के छात्रों के साथ साक्षात्कार दे सकेगा।

आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीय वर्ष)
चतुर्थ सत्रार्द्धः
अध्यापक शिक्षा (द्वितीय भागः)
प्रश्न पत्र सं0–EC-A4

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को निम्नलिखित को समझने मे सक्षम बनाना।
2. छात्रों को शिक्षण व्यवसाय एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न प्रकारों से परिचित कराना।
3. भारत में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का विकास
4. प्रभावशाली सम्प्रेषण हेतु अध्यापकों के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की क्षमता।
5. अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसन्धान।

ईकाई–1

1. दूरस्थ शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा।
2. अभिविन्यास एवं पुनश्चर्या कार्यक्रम।
3. विशिष्ट विद्यालयों के लिए शिक्षक तैयार करना
4. विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम को लागू करना।

ईकाई–2

5. सेवारत अध्यापक शिक्षा के विभिन्न अभिकरण
6. शिक्षणाभ्यास के उद्देश्य एवं व्यवस्थापन।
7. अध्यापक शिक्षा एवं अभ्यास विद्यालय की वर्तमान समस्याएं।

ईकाई–3

8. अध्यापक शिक्षा में निर्देशन की युक्तियां
9. व्याख्यान
10. वाद–विवाद एवं परिचर्चा
11. ब्रेन स्टार्मिगं (मस्तिष्क मन्थन)
12. अनुरूपण
13. क्रिया अनुसन्धान
14. पर्यवेक्षित अध्ययन

ईकाई–4

1. **अध्यापक शिक्षा में अनुसन्धान के क्षेत्र–(निम्नलिखित के विशेष सन्दर्भ में)**
   1–शिक्षक प्रभावशीलता।
   2– अध्यापक शिक्षा में प्रवेश की समस्या।
   3– अध्यापक के व्यवहार का परिशोधन ।
   4– विद्यालय की प्रभावशीलता ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. शास्त्री के0एन0 – अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, रोहिणी दिल्ली
2. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
3. महर्षि सतोष कुमार – अध्यापक शिक्षा, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा में गुणवत्त का विकास, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली

आचार्य (एम0ए0) शिक्षाशास्त्रम् (द्वितीयः वर्ष)
चतुर्थ सत्रार्द्धः
(वैकल्पिक) विशिष्ट शिक्षा (द्वितीय भाग)
प्रश्न पत्र सं0–EC-B4

पूर्णांक–100
(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य छात्र –

1. छात्र विशिष्ट बालकों के सम्प्रत्यय को परिभाषित करने में सक्षम सकेगें।
2. विशिष्ट बालकों की समस्याओं और आवश्यकताओं की व्याख्या कर सकेगें।
3. भारत में विशिष्ट शिक्षा के अर्थ एवं क्षेत्र की व्याख्या कर सकेगें।
4. समग्र शिक्षा/समाहारी शिक्षा के अर्थ को समझ सकेगें।
5. विभिन्न प्रकार की विकलागंता से ग्रस्त बालकों एवं उनके कारण की व्याख्या कर सकेगें।
6. विशिष्ट बालकों के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का वर्णन कर सकेगें।

ईकाई–1

1. **श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा–**
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम

ईकाई–2

2. **अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा।**
   (क) विशेषताए
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं सुधारात्मक कार्यक्रम

ईकाई–3

3. **प्रतिभाशाली एवं सृजनशील बालकों की शिक्षा।**
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम

ईकाई–4

4. **शिक्षा एवं बाल अपराधी।**
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम
5. **विशिष्ट बालकों के लिए निर्देशन एवं परामर्श**
   (क) अर्थ एव आवश्यकता

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1- M.H.R.D (1993) - Seleted Education Study Ministry of Education Govt. of India.
2- Tiwari D.D (1975) - Education at the Crass Road' Chigh Publication Allahabad.